❀ श्रीजिनेन्द्रायनमः ❀

# न्यामत विलास

❀ अंक ११ ❀

# कुन्ती नाटक ॥

( १ )

॥ चाल ॥ दोहा ॥ मंगलाचरण ॥

परम ज्योति परमात्मा, नेमनाथ भगवान ।
वंदित जिनके चरण जुग, होत जीव कल्याण ॥

( २ )

॥ चाल ॥ नाटककी ॥ अय सनम तू जरा मुझे देगो बता
कहां जाके छुपा नहीं आता नजर ॥

सुनो कुन्ती का हाल । हाल है बे मिसाल ।
मिटे दिलका मलाल । मिले सच्ची खबर ॥ १ ॥
कैसे पांडु अधीर । की अनोखी तदबीर ॥
गया कुन्ती के तीर । जीमें होके निडर ॥ २ ॥
होके कुन्ती पुरआब । दिया उसको जवाब ॥

क्रिया है ला जवाब । हुवा मुशकिल गुजर ॥ ३ ॥
नहीं कोई वकील । आप करके दलील ॥
अपना रक्खा है शील । दिखला के हुनर ॥ ४ ॥
फिर पांडु ने जाय । उसको शासन सुनाय ॥
भ्रम मनका मिटाय । किया सबसे निडर ॥ ५ ॥
लिया कुन्ती ने जान । फिरतो हो बे गुमान ॥
लिया पांडु को मान । अपना साजन सुघर ॥ ६ ॥
करके गंधर्व रीति । हुई दोनों में प्रीत ।
फेर शादी की रीत । करी दोनों नगर ॥ ७ ॥

( ३ )

चाल ॥ पंजाबी ॥ शशी तेरे बाग़ में उतरें व्योपारी ।
( अथ राजा व्यास का पांडु के व्याह का विचार करना )

———:o:———

एक दिन व्यास राजाने विचारा ।
कि कीजे व्याह पांडु है कुमारा ॥ १ ॥
दूत अंधकवृष्टी पास भेजा ।
के कुंती दीजिये पांडु को राजा २॥
सुना अंधकवृष्टी ने समाचार ॥
दशों सुतको बुलाया अपने दरबार । ३ ।
बनाया मंत्र ऐसा एक बारी ।
इसी में मस्लहत सबने विचारी ॥ ४ ॥
सुता कुंती कभी इसको न दीजे ।

जगत में यह कोई अपयश न लीजे ॥ ५ ॥
दूत इंकार सुन गजपुर में आया ।
सभी वृत्तान्त पांडु को सुनाया । ६ ।
कहीं तजवीज़ ब्याह की और कीजे ।
नहीं कुंती की मनमें आस कीजे । ७ ।
अरज़ पांडु ने बारंबार कीनी ।
नहीं कुंती मिली चुप खैंच लीनी । ८ ॥
मगर यह मोह के फंदे बुरे हैं ।
न्यामत देख पांडु क्या करे हैं । ९ ॥

## (४)

चाल रागनी ॥ जंगला ॥ गंगा जात्री मिरासी लोगों
के भजन की खंजरी खड़ताल पर गाने की ।

अथ राजा पांडु का कुन्ती के विरह में वन में जाना और कुंती से मिलना ।

सुन सुन कुन्ती का रूप पांडु ने तज दिया अन्न खाना ॥
तज दिया अन्न खाना अरु न्हाना आभूषण सुगंध लगाना ॥
पड़ गया पीला रंग भूल गया आना और जाना । सुन० । टेक ॥
एक समय क्रीडा हेत गयो वनके मंझार ।
देखी लता मंडप में फूल की सेज त्यार ॥
तापे इक मुंद्री पड़ी थी सो उठाय लीनी ।
आयो इक खग लखी सुंदरी न सोच कीनी ॥
पांडु कहे सुन यार-सोच मत धार ।
मुंद्रीका मेरे कर आना । सुन० ॥ १ ॥

मुंद्री को पाय खग मनमें हरष कियो ।
पांडु कहे अपना आगम वृत्तान्त कहो ॥
बोलो नभचर विजयारध हमारा धाम ।
कुल है गगनचर वज्र सुमाली नाम ॥
प्रियसंग यहां क्रीड़ा करी-मुद्रिका गिरी ।
सो हमने घर जाकर जाना ॥ सुन ॥ २ ॥
पांडु कहे ऐसो इस मुंदरी में कहा गुण ।
तज निज देश आयो ढूढने सघन वन ॥
बोलो खग सुन काम रूपणी है याको नाम ।
मन वांछित रूप करे आवे याही काम ॥
दे दो हमें इकबार-यूं पांडु पुकार ।
पड़ा कुंती के घर जाना । सुन० । ३ ॥
पांडु पाय मुद्री को निज करमांही लियो ।
ताही समय शोरीपुर महा वेगकर गयो ॥
ज़ादों के अंतेवर में रात को छुपाय कर ।
कुंती के सदन मांहीं पहुंचे छल बल कर ॥
आसन बैठी लखी-नहीं कोई सखी ।
न्यायमत पांडव सुख माना ॥ सुन० ॥ ४ ॥

( ५ )

चाल-राग जंगला झंझोटी । कहा सोवे महारानी लल्ला गोदी लेलरी । अथ राजा पांडु का कुन्ती से अदास करना ॥

तेरे कारण तजी गजपुर नगरी ॥

गजपुर नगरी सुध बुध सगरी ॥ तेरे० ॥ टेक ॥
क्या कोई है किन्नरिसुर सुंदर ।
क्या कोई काम लता गगरी ॥ तेरे० ॥ १ ॥
रोहणी देवी नागकुमारी ।
रूप कूं लजावें तेरे आगे सगरी । तेरे० ॥ २ ॥
तुम बिन जीवन जोवन जग में ।
सुफल नहीं प्यारी मौत भरी । तेरे० ॥ ३ ॥
तेरी याद करूं में निश दिन ।
कल न पड़त मोहे एक घड़ी । तेरे० ॥ ४ ॥
तड़पत तड़पत दर्शन पाये ।
तन मन की सब सोच हरी । तेरे० ॥ ५ ॥
इम कह हाथ गह्यो कुंती का ।
ना कछु मनमें शंक करी ॥ तेरे० ॥ ६ ॥
न्यापत काम महा अन्याई ॥
सोचे न जोग अजोग जरी । तेरे० ॥ ७ ॥

( ६ )

चाल । कहासोवे महारानी लछ्रा गोदी ले लेरी ।
अथ कुंती का जवाब देना और अपना हाथ छुड़ाना ॥

मैं तो कन्या हूं कंवारी छोड़ो बय्यां हमारी ॥
बय्यां हमरी मत गहे तुमरी । मैं तो० ॥ टेक ॥
अद्भुत रूप तुम्हारा प्यारे ॥

हर लिया मन मेरा कीनी ठगरी । मैं तो० ॥ १ ॥
कौन राज तुम किसके बालक ॥
कौन काज आये हमरी । मैं तो० ॥ २ ॥
मेरा महल अगम था प्यारे ।
कह बिध बिपाई तुमने डगरी । मै तो० । ३ ॥
मैं हूं नाथ कंवारी कन्या ॥
संगम अपजश हो जगरी ॥ मैं तो० ॥ ४ ॥
जो विन व्याहे भोग करोगे ॥
महा पाप लगे तुमरी । मैं तो० ॥ ५ ॥
पहिले भव रावण सीताको ।
क्वांरी हर लायो नहीं शंक करी । मैं तो० ॥ ६ ॥
तब इस भव यह शठ पायो ।
आप मरा सब सेनमरी ॥ मैं तो० ॥ ७ ॥
न्याय नीत की बात यही है ॥
आज्ञा तात लेउं सगरी । मैं तो० ॥ ८ ॥
रचलूंगी मैं स्वयंवर अपना ॥
डालूं माल गले तुमरी । मैं तो० ॥ ९ ॥
तब तुम भोग विलसना साहब ।
अब हम से न करो झगरी । मैं तो० ॥ १० ॥
न्यामत बहु कुंती समझायो ।
पांडू मन नहिं एक धरी । मैं तो० ॥ ११ ॥

(७)

चाल ॥ कहा सोवे महाराणी लल्ला गोदी लेजेरी ॥

अथ राजा पांडुका जवाब देना ॥

जग निंदा का न कर प्यारी सोच ज़रा ॥
सोच ज़रा सुन वच हमरा। जग० । टेक ।
पांडु नाम व्यास सुत कहिये ॥
कुरु जंगल में राज मेरा । जग० । ॥ १ ॥
शोभा रूप सुनी मैं तेरी ॥
तज गजपुर वन वन में फिरा। जग० ॥ २ ॥
वंजू सुमाली मुंदरी दीनी ।
विद्या रूप सरूप धरा । जग० ॥ ३ ॥
निश को छुप शौरीपुर आयो ॥
दुःख सहा सिरपर सगरा ॥ जग० ॥ ४ ॥
मंत्राकर्षण नाम तुम्हारा ।
सदन वीच आकर्श करा ॥ जग० । ५ ।
काम वाण तेरे उर लागे ॥
नाश किया सव सुख हमरा । जग० ॥ ६ ॥
हे कामन निश्चय उर धारो ॥
काम लिया है वान चढ़ा । जग० ॥ ७ ॥
लज्जा धर्म जभी तक होवे ॥
जवही लग मन ज्ञान खरा । जग० ॥ ८ ॥
जनकादिक मर्जाद जभी लग ॥

जव लग काम नहीं छोड़े सरा । जग० ॥ ९ ॥
तातैं चिंता वेग निवारो ॥
काम अगन मोहे शांत करा । जग० ॥ १० ॥
पूरण आशकरो अव हमरी ॥
मतना और करो झगरा ॥ जग० ॥ ११ ॥
जो भंग मान करोगी मेरा ॥
तो तुम प्राण हरों हमरा । जग० ॥ १२ ॥
न्यामत धिक धिक कामदेव को ॥
धर्म लाज नहीं देखे जरा । जग० ॥ १३ ॥

(८)

चाल । विंदी लेदे लेदे मेरे माथे का शृंगार ।
अथ कुंती का नाराज़ होकर जवाब देना ।

---:o:---

मत वोलो वोलो वोलो ऐसे वचन असार ॥
वचन असार ज़रा धर्म विचार । मतवोलो० ॥ टेक ॥
चंदा जावो सूरज जावो जावो दिशचार ॥
मैं शील शिरोमणी कभी न छोडूं कहो तू हजार ॥ १ ॥
जल अगनी हो जावे अगनी होवे जलसार ॥
मेरा मन मेरु नहीं डिगे करो चाहे जतन अपार ॥ २ ॥
शील तजा नहीं सीता, रावण ले गया दुराचार ।
वह अगन कुंड जल हुवा खिले चहुं दिश फुलवार ॥ ३ ॥
कन्या भोग विलसना नहीं शासन के मंझार ॥
अरे क्षत्री कुल के दाग लगे मत करियो यह विचार ॥ ४ ॥

( ९ )

चाल-नाटक ॥ चलती चपला चंचल चाल सुंदर नार अलबेली ॥
अथ पांडु का जवाब देना ॥

———:०:———

करती क्यों इतना अभिमान सुंदरनार अलबेली ॥
यह जोवन छिन में जावे । प्यारी उलटा नहीं आवे ॥
हम संग क्यों करती इठखेली । करती० ॥ टेक ॥
तेरे कारण कामनी छोड़ दिया घरबार ।
वन वन में रुलता फिरा पाये दुःख अपार ॥
हां हां हां सुन मतवारी । ओहो संग हिरदय वारी ॥
टुक सुन लीजे नार नवेली ॥ करती० ॥ १ ॥

॥ १० ॥

चाल-(नाटक) तेरी छलबल है न्यारी ॥
अथ कुंती का जवाब देना ॥

———:०:———

तेरी सुन सुनमैं हारी । ऐसी छलबल की सारी ॥
करो ऐसा न मोसे झगरियामान ॥
जावो जावो नादान । मोहे न बनावो आन ॥
पापों से मनको हटावो । कहा मान ॥
अजी छोड़ो जी हाथ । नहीं होने की बात ॥
करो औरों से घात । अजी वाह वाह वाह ॥
वाह वाह वाह । वाह वाह वाह । तेरी सुन० ॥ १ ॥

( ११ )

(॥ चाल-नाटक )॥ अम्मां मुझे दिल्ली की टोपी मँगादे ॥)

अथ राजा पांडु का कुंती को फिर समझाना ।

प्यारी तुझे कौन विधी से मनाऊं ।
कैसे मनाऊं । कैसे सुझाऊं ।
कैसे तेरे मनके भरम को मिटाऊं ॥ प्यारी० ॥ टेक ॥
तू जीती प्यारी लो हम हारे ।
ला तेरे चरणों में सर को झुकाऊं । प्यारी० ।१ ।
एक और अर्दास है तुझ से प्यारी ।
गर होवे मंजूर तो मैं सुनाऊं । प्यारी० ॥ २ ॥

( १२ )

चाल ( नाटक ) अम्मां मुझे दिल्ली की टोपी मंगादे ॥

अथ कुंती का जवाब देना ॥

कहिये, बिन सोचे न मैं हां करूंगी ।
ना मैं हां करूंगी । ना हृदय धरूंगी ।
पहिले मैं तो सुनकर बिचार करूंगी । कहिये० । टेक ।
धर्म के बिपरीत गर बात होगी ।
मैं वह नहीं मंजूर हरगिज़ करूंगी । कहिये० । १ ।
न्याय नीत की गर कुछ कहोगे ।
उसे मैं सिर आंखों पे अपने धरूंगी ॥ कहिये० ॥ २ ॥

( १३ )

चाल ( नाटक ) अम्मां मुझे दिल्ली की टोपी मंगादे ॥

अथ राजा पांडु का कुन्ती से गन्धर्व विवाह के लिये अरदास करना ॥

प्यारी तुझे नीती की रीती सुनाऊं ।

रीती सुनाऊं रीती बताऊं।
जैसी तेरी मनशा हो वैसी सुनाऊं। प्यारी०। टेक०।
मनशा से प्यारी होती है शादी।
ला तुझ को कह जैसे निश्चय कराऊं। प्यारी०। १।
शासन निहारो। मन में विचारो।
अच्छा तुझे गंधर्व रीती बताऊं॥ प्यारी०॥ २॥
गंधर्व व्याह अबतो करलीजे। प्यारी।
पीछे लोक रीति से व्याह रचाऊं। प्यारी॥ ३॥

## ( १४ )

चाल। वारी जाऊं जी सांवरिया तुम पर वारना जी॥
अथ कुंती का गंधर्व विवाह स्वीकार करना॥

यह मैं मानी जी सांवरिया मोहे स्वीकारना जी॥ टेक॥
अब मैं अपने मन से प्यारे। मान लिया तुम पती हमारे।
गंधर्व व्याह किया तुम से इस वारना जी॥ १॥
अब मैं आप सुहाग सवारूं।
तुमपर तन मन धन सब वारूं।
तुम मेरे भरतार तुमपर वारना जी। २।
अब तुमही सरताज हमारे॥
तुम बिन और जगतके सारे।
पितु सुत भाई सम। हमको मन धारना जी। ३॥
इतना तुमने कष्ट उठाया। मेरे मन का भरम मिटाया॥
धर्म वचन किये धारण दुख परिहारनाजी। ४।

जो मैं कही माफ़ करदीजे। कहे सुने का गिला न कीजे ॥
मैं चरणन की दासी तुम हित कारनाजी। ५ ॥

( १५ )

चाल ॥ कहा सोवे महाराणी लल्ला गोदी केलेरी ॥
अथ कुंती को गंधर्व विवाह पश्चात् गर्भ रहना और धाय
को खबर होना और धाय का कुंती से कहना ॥

—:०:—

जादों कुल के दाग लगाया तूने ॥
लगाया तूने यह लजाया तूने ॥ जादो० ॥ टेक ॥
हे पुत्री तुम यह कहा कीना।
कारज निंद बनाया तूने ॥ जादो० ॥ १ ॥
बाल अवस्था योवन वंती।
शील रतन को गंवाया तूने। जादो० ॥ २ ॥
अति निर्मल कुल जादों वंसी ॥
महा कलंक लगाया तूने। जादो० ॥ ३ ॥
मात पिता का डर नहिं माना।
अपना मता चलाया तूने ॥ जादो० ॥ ४ ॥
राजा सुने जानले मेरी।
महाशंकट करवाया तूने ॥ जादो० ॥ ५ ॥

(१६)

चाल। कहासोवें महाराणी लल्ला गोंदी केलेरी।
अथ कुन्ती का जवाब देना और अपघात करने का विचार करना

—:०:—

उप माता मैं तो प्राण हरूंगी अपना ॥

हरूं अपनागी हरूं अपना । उप० ॥ टेक ॥
जो माता अब हुक्म सुनावो ॥
सोही हाल करूं अपना । उप० । १ ।
राजा पांडू कुरवंसीने
आकर हाल सुनाया अपना । उप० । २ ॥
मैं भी देख काम वश होके ।
गंधर्व ब्याह रचाया अपना । उप० । ३ ॥
शील रतन को दाग न लाया ॥
पांडू पती है बनाया अपना ॥ उप० । ४ ॥
पर इक इतनी चूक हुई है ।
स्वयंवर आप न रचाया अपना । उप० । ५ ॥
बेशक अपकीरत होवेगी ॥
कुलसकलंक बनाया अपना ॥ उप० । ६ ॥
जो अपकीर्ति मिटे मरने से ॥
तो तन दूर करूं अपना ॥ उप० । ७ ।
असी खैंच निजकर में लीनी ।
उद्यम घात किया अपना । उप० । ८ ।
अब मम दोष इसी विध नाशे ॥
तन से शीश उड़ाऊं अपना ॥ उप० ॥ ९ ॥

( १७ )

चाल ( नाटक ) मैं प्यारी कुर्बान ।

अथ पायका तलवार कुंती के हाथ से छेना और प्यार करना ॥

तैं प्यारी नादान । पशेमानी नादानी पन ठानी मेरी जान ।
तैं प्यारी नादान ॥ टेक ॥

होवे ख्वारी । अघभारी ।
जो प्यारी खोवे जान ।
असी डारो । हित सारो ।
चित धारो बतियां ॥ तैं प्यारी० । १ ॥
काहे रोती जां खोती । यूं होती परीशान ॥
तेरी प्यारी लखजारी ।
वेजागे हैरान । तैं प्यारी० । २ ॥
आवो प्यारी तज जारी लाऊं प्यारी छतियां ।
धन वारूं तनवारूं ।
मन वारूं मेरी जान । तैं प्यारी० ॥ ३ ॥

## ( १८ )

चाल ॥ लावनी ॥ मरहटी लंगड़ी । या नाटक की चाल में ॥
अथ राजा और राणी को कुन्ती के गर्भ रहनेकी खबर होना ॥
और राजा का धाय पर कोप करना ॥

अरी नीच अघ लीन दुष्टनी माह पाप तूने कीना ।
कुंती सुताके संग कहो यह दुसकृत किसने कीना ॥ टेक ॥
पुरुष तैं आनो घर में महां निष्ट यह काम किया ।
उज्जल कुल को आज यह तूने दोष लगाय दिया ।
रक्षा कारण सौंपी कुंती तैं यह रक्षा काम किया ।
ज्यों बिल्ली को दूध की रखवारी बिठलाय दिया ।
सो भाजन को फोड़ दूध सब आप आपही पी लीना
कुंती सुता के संग कहो यह दुसकृत किसने कीना । अरी० १ ।

कहो किम मुंह से नृप सभा में ऊंची बात बनावेंगे।
बैठत छीजे प्रभा हमरी क्या मूंह दिखावेंगे।
समुद्र विजय से पुत्र हमारे कहो क्या नाम धरावेंगे।
जहां जावेंगे वहीं इस बात से सदा लजावेंगे।
छत्री कुल जादो बंसी हम, तैं कुल शंक नहीं कीना।
कुंती सुता के संग कहो यह दुसकृत किसने कीना। अरी० २
नागन जल नारि नर खोटा कभी भरोसा नहीं करना।
पावक ठंडी नाग मुख अमृत शासन नहीं वरना।
पच्छम सूरज उगे मेरु चल पड़े तो हृदय धर लेना॥
बुध जन होके कभी विश्वास नार का नहीं करना।
इम कह कोप किया राजा ने खड़ग सूत कर में लीना।
कुंती सुता के संग कहो यह दुसकृत किसने कीना। अरी० ३।
अरी धाय सुन सीस तेरा कुंती का अभी उड़ादूंगी।
इस छल बल का तुम्हें दोनों को मज़ा चखादूंगा।
आग सदन को लाय तुझे कुंती को मांही जला दूंगा।
तू नहीं जाने वंश छत्री सो तुझे दिखादूंगा।
कहे राजा धाये सच कहदे इसी में तेरा है जीना॥
कुंती सुताके संग कहो यह दुसकृत किसने कीना। अरी०४।

(१९)

चाल॥ म्हारा रसीना लगना जी अब घर आजाना॥
(अथ धाय का राजा से हाल कहना और क्षमा मांगना॥)

इक सुनिये तो महाराज नेक क्षिमा कीजे।

म्हारा एक रती नहीं दोष सांच समझ लीजे ॥ १ ॥
जादो कुल पालक तुम राजा।
जो बीती सो ही कहूं हिये में धर लीजे ॥ २ ॥
कुंती का नहीं दोष ज़रा है।
नहीं दोष कछु मेरा परीक्षा कर लीजे ॥ ३ ॥
केवल दोष करम का राजा।
क्या नहीं नाच नचावें जगत में लख लीजे। ४ ॥
एक बर्ष प्रभु हार न पायो।
रामचन्द्र बनोबास फिरे कहो क्या कीजे। ४ ॥
सीता सती हरी रावन ने ॥
पड़ी अगन के बीच दोष बतादीजे ।। ५।
क्या ज्ञानी ध्यानी बलधारी।
होन हार सोही होय जतन चाहे सौ कीजे। ६।
कुरवंशी कुरु जंगल मांही।
गजपुर पांडु नरेश ध्यान टुक करलीजे। ७।
कुंती पांडु रायने मांगी।
तुम कर दिया इंकार याद सोही कर लीजे ॥ ८ ॥
लुब्ध भयो सुन रूप कुंती का।
तज दिया अन्न जलहार इलाज कहो क्या कीजे ॥ ९ ॥
बन बन बर्षों फिरा भटकता।
बज्र माली से कहा मुद्रिका दे दीजे ॥ १० ॥
काम रूपिणी मुद्री लेकर।

आयो सदन के बीच खबर कहो कैसे लीजे । ११ ॥
पांडु बात एक नहिं मानी ।
कुंतीने बहु समझायो दोष याही क्या दीजे । १२ ।
गंधर्व व्याह किया कुंती से ।
जो शासन परमाण कलंक नहीं दीजे । १३ ॥
मैं देखा पूछा कुंती से ।
कह दिया सारा हाल फरक रति नहीं कीजे । १४ ॥
जो बीता सो सुनाया तुमको ।
अब हम आगे खड़ी जो चाहे सो कीजे । १५ ।
अब तक तो मैं रक्षा कीनी ।
अब तुम राय सुजान समझ कारज कीजे । १६ ॥
कोप निवारो राजा अपना ।
सांच न आवे आंच निश्चय कर लीजे ॥ १७ ॥

( २० )

चाल नाटक ॥ सुनिये सुनिये सरकार । करूं क्या आशकार ॥
( अब राजा का धाय से हाल सुनकर बिचार करना )

---

यह तो सारी सही । जो है तूने कही ॥
पर मेरी गई शोभा तो बिगड़ । १ ।
मेरा देशों में राज रहे निर्मल समाज ।
करो ऐसा इलाज । सारे मिलकर । २ ।
गई सो तो गई ॥ राखो जो कुछ रही ।
हो किसी को नहीं । जरा इसकी खबर ॥ ३ ॥
अब यही है विचार । हो जो इसके कुमार ।
देवो जमना में डार । करो दिलमें सबर । ४ ।

फेर पांडु बुला ॥ करो कुंती का ब्याह ।
शुभ वेदी रचा । मिटे निंदा का डर । ५ ।

( २१ )

राग जंगला झंझोटी । चाल गंगा जात्री मेवाती लोगों की ॥ ( अथ कुन्ती के पुत्र होना और उसको जमना में डालना ॥ )

——:o:——

इक जग निंदा के काज करण जा यमुना में डारा ।
जा डारा यमुना की धारा । जग निंदा का है भय भारा ॥
रतन कवच तन कुंडल कान गल मोतियन की माला ॥टेक॥
अब जब बीत गये पूरण मास नव ।
जनो इक पुत्र रवि सम लिये सुख तब ।
कानों कानों बात चली सारे पुर माहीं ॥
तातैं याको नाम रखो करण राय बली ।
कर मंत्री संग विचार मतो यह धार ।
करण का पता लिखा सारा । इक० ॥ १ ॥
करण नाम लिख जनम का लिखो दिन ।
घड़ी पल सारी लिखी पक्ष मास और सन ॥
लगन महूरत और सूरत चांद तारे ।
गुरुनक्षत्र अते पते लिख दिये सारे ।
जनमपत्र यों रचा करण संग रखा ।
मंजूषा के सोही मंझधारा । इक० । २ ॥
फैंकदी मंजूषा ऐसे यमुना की धार ॥
जैसे वीत रागी मुनी तजे सब घरबार ।

करण पुन्यवान होनहार बलवान ॥
पहुँचा चंपा के स्थान जहां खड़े निगहवान ।
लखी मंजूषा आते मनमें हर्षांत ।
किया सब ने जय जय कारा ॥ इक० ॥ ३ ॥
तुरत उपाय कर मंजूषा निकाल लीनी ।
झट पट जाय राजा भानू करमांहि दीनी ॥
राजा ने खोल सुत गल से लगाय लीया ।
निरख २ मन मांही अचरज किया ॥
ले चला सदन हर्षांत कहत मुसकात ।
राधे ले सुत अपना प्यारा । इक० ॥ ४ ॥
कहां राय अंधक वृष्टि सुरपुर गयो ।
कहां राजा करण का महल में जनम भयो ॥
कहां राजा यमुना की धार में वहाय दियो ।
कहां पुन्य उदय यमुना से है निकास भयो ॥
चंपापुर गयो भानूकर लियो ।
न्यामत करम जोग सारा ॥ इक० ॥ ५ ॥

( २२ )

चाल । कहा सोवे महाराणी लछ्छा गोदी लेलेरी ।
अथ राजा भानू व राणी राधा का राजा करण का उच्छव ॥
करन । और राजा का रानी को पुत्र सौंपना ।

पहले प्यारी राधे राणी बैठी लाल खिला । टेक ।
रतन कवच तन कानों कुंडल ।
गल सोहे मोतियन कंठला ॥ १ ॥

पुन्य उदय अपने अब जानो ।
यमुना में बहता हुआँ पुत्र मिला ॥ २ ॥
पायो दुख नव मास किसी ने ।
तू नित लख याकी बालकला ॥ ३ ॥
रात दिना चिंतातुर रहते ।
बिन सुत पीछे को राज करा ॥ ४ ॥
सो चिंता भई दूर हमारी ।
दोनों हिरदों का मानो कमल खिला ॥ ५ ॥
सुभट बिठाए यमुना तट में तो ।
निश दिन रहा याकी बाट लगा ॥ ६ ॥
जुग जुग जीवो बालक तेरा ।
लख सुख तन मन शोक गया ॥ ७ ॥
करण नाम बालक का प्यारी ।
शुभ लक्षण तू तो देख ज़रा ॥ ८ ॥
बांट बधाई आज नगर में ।
अरु जिन जी की जाके पूजारचा ॥ ९ ॥
राजा रानी महा सुख मानो ।
बहु बिध नगर उछाव करा ॥ १० ॥
करमन गत न्यामत को जाने ।
कुंती को शोक राधे हरष मिला ॥ ११ ॥

---

(२३)

चाल ॥ सुफल भई म्हारी आज नगरिया ।

( अथकाम विश्वास निषेध रूप उपदेश )

कामकभू विश्वास न धारो । टेक
मदन करे जब मदपुर मांही ।
नीत भीत को तोड़ बिडारो ॥ १ ॥
जौं लौं ज्ञान धरम अरु लज्जा ।
तौं लौं काम गयंद न छारो ॥ २ ॥
पांडु वचन सुन कुंती भामा ।
अधिक भयो चित मोह अंधियारो ॥ ३ ॥
पंचटान के बाण जो लागे ।
नर नारी चित खंड कर डारो ॥ ४ ॥
गंधर्व ब्याह कियो दोनों ने ।
पांडु ने हाथ कुंती गल डारो ॥ ५ ॥
लज्जा अंचल दूर हटायो ।
मदनातुर दोऊ भोग बिचारो ॥ ६ ॥
कुंती पांडु महा गुणधारी ।
काम ने छाय दियो अंधियारो ॥ ७ ॥
नित नौ बाड़ शील की राखो ।
काम गयंद करे न बिगाड़ो ॥ ८ ॥
याने सब सुर नर को जीता ।
याही जीता जिन संजम धारो ॥ ९ ॥
न्यामत पुष्प चढा जिन जी को ।
टूटे चाप मदन सर भारो ॥ १० ॥

## ( २४ )

चाल ॥ नाटक ॥ बूटी लाने का कैसा बहाना हुवा ।
( अथ इस कुंती नाटक का नतीजा और काम निषेध रूप उपदेश )

—:o:—

कामी होने का यह फल उठाना पड़ा । कामी होने का ॥
पांडु राजा को चोरी से जाना पड़ा । कामी होने का ॥
कामी होने का यह फल उठाना पड़ा । टेक ॥
होके मन में लाचार ॥ फिरा बन बन में ख्वार ॥
पाये दुक्ख अपार । वज्र मालीका अहसान उठाना पड़ा ॥१॥
किया काज अकाज । खोई कुलकी भी लाज ॥
लाज राज समाज-आगे राजों के मुह को छुपानापड़ा ।२।
कुंती राणी सुशील इस से करके दलील ॥
किया नाहक़ ज़लील-उस बेचारी को कष्ट उठाना पड़ा ॥ ३ ॥
कुंती राणी की मात ॥ तथा तात और भ्रात ॥
अपने मनमें लजात । ले करण को जमन में बहाना पड़ा ।४।
सुनिये करके खयाल । रहना संजम संभाल ॥
वरने होगा वह हाल-जो कि न्यामतको इसदम सुनाना पड़ा ।५।

## (२५)

चाल ॥ रेखता ॥ इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥
अथ कुंती सती व राजा पांडुकी शादी होना और सबका मिलकर मुबारिकबादी गाना ॥

—:o:—

सती कुंतीकी अब शादी मुबारिकहो ॥
राजा पांडुको शहज़ादी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ १ ॥

मुद्दतों आफ़तें झेली थीं शहज़ादा के लेनमे ॥
आज आकर हुई शादी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ २ ॥
धन्य कुंती धरम शासनको देखा और तसल्लीकर ।
बचाया शील की शादी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ ३ ॥
करण लड़का मुबारिकहोवे चंपापुर के राजाको ।
राधे राणी के घर शादी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ ४ ॥
अमोलक शील है जग में नहीं इसका कोई सानी ।
इसे धारा जिनेन्द्रादी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ ५ ॥
जो कोई शील को पाले कामके रागको टाले ।
नमैं आकर सुरेन्द्रादी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ ६ ॥
जो कामी होते हैं नियोगादी के मसले बनाते हैं ।
हो इस मसले की बरबादी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ ७ ॥
विवाह विधवाओं का करना शील का नाश करना है ।
बालपन की तजो शादी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ ८ ॥
हमें अब हाजरीं जलसा मुबारिक आप का मिलना ।
तुम्हें उपदेश शीलादी मुबारिक हो मुबारिकहो ॥ ९ ॥
न्यायमत शील को पालो खाकसर काम के डालो ।
यूंही कह गए मुनी आदी मुबारिकहो मुबारिकहो ॥ १० ॥
दोहा । पांडु पुराण अनुसार यह, नाटक किया तैय्यार ।
शील शिरोमणि पाव जो, पढ़ें सुनें नरनार ॥

इति श्री कुन्ती नाटक समाप्तम् ॥

# नियम ॥

१—चिट्ठी में पता साफ़ नागरी वा उर्दू वा अंग्रेजी में लिखना चाहिये ॥

२—यदि किसी चिट्ठी का जवाब न जाए तो दूसरी चिट्ठी साफ़ पता लिखकर भेजनी चाहिये ॥

३—चिट्ठी में साफ़ तौर पर लिखना चाहिये कि पुस्तक नागरी की दरकार है या उर्दू की ॥

४—५ रुपये से कमपर किसी को कमीशन नहीं दिया जावेगा ॥ ५) रु० या ५ रु० से ज्यादा पर २० रु० सैकड़ा कमीशन मिलसक्ता है ॥

५—यदि कोई बात दरयाफ्त करना हो तो जवाबी कार्ड आना चाहिये ॥

६—कोई साहब पार्सल वापिस न करैं वरने डाक महसूल उसको देना होगा ॥

७—॥) से कम कोई पार्सल नहीं भेजा जावेगा ॥

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैनी
सैक्रेटरी डिस्टरिक्ट बोर्ड
मु० हिसार ( पंजाब )

(नोटिस)

न्यामतबिलास के निम्न लिखित भाग तैय्यार हो चुके हैं मगर अभीतक वह ही अंक छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है।

| अंक | नाम पुस्तक | | नागरी | उर्दू |
|---|---|---|---|---|
| १ | जिनेन्द्र भजन माला | .... | ।) | |
| २ | जैनभजन रत्नावली | .... | ।) | |
| ३ | जैनभजन पुष्पावली | | | |
| ४ | पंच कल्याणक नाटक | | | |
| ५ | न्यामतनीति | | | |
| ६ | भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक | | | |
| ७ | जैनभजन मुक्तावली | .... | =) | |
| ८ | राजलभजन एकादशी | ... | -) | |
| ९ | सुगिगान जन भजन पचीसी | .... | =) | |
| १० | कलियुगलीला भजनावली | .... | =) | -)॥ |
| ११ | कुन्तीनाटक | .... | =) | |
| १२ | चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक | .... | ॥=) | ।=) |
| १३ | अनाथ रुदन | .... | -) | |
| १४ | जैनकालिज भजनावली | | | |
| १५ | रामचरित्र भजनमंजरी | | | |
| १६ | राजल वैराग्यमाला | | | |
| १७ | ईश्वर स्वरूप दर्पण | | | |
| १८ | जैन भजनशतक | .... | ।) | |
| १९ | थ्येटरीकल जैनभजन मंजरी | .... | =) | =) |
| २० | मैनासुन्दरी नाटक | .... | १॥) | |
| | ,, ,, सजिल्द | .... | १॥।) | |

पुस्तक मिलने का पता-

न्यामतसिंह जैन सैक्रेटरी डिस्टरिक्ट बोर्ड हिसार (पंजाब)